Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-3, December-2023
www.researchguru.net

शिक्षा के माध्यम से सतत विकास

Dr. Anita H. Patel
Assistant Professor, Department of Economics, Government Arts College, Jhagadia (Ranipura) Dis. Bharuch Mobile no. 9173902900

सारांश–

आज के समय में विश्व के सभी देश तीव्र आर्थिक विकास करने के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न कर रहा हैं। यंत्रो, टेक्नोलॉजी का उपयोग, शहेरीकरण, औद्योगिकीकरण की वजह से प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न हुयी हैं। पर्यावरण की समतुला में अनेक प्रकार की समस्याये उत्पन्न हुई हैं। जिसके गंभीर असर मात्र मानव मात्र को ही नहीं परन्तु समग्र जीवसृष्टि को भुगतना पड़ रहा हैं। इन सभी समस्याओ को ध्यान में रखकर सतत विकास की विभावना अस्तित्व में आयी। सतत विकास को प्राप्त करने में शिक्षा की भूमिका महत्त्व की हैं।

मुख्य शब्द– *सतत विकास, पर्यावरण, शिक्षा*

प्रस्तावना–

नेल्सन मंडेला के अनुसार "शिक्षा वह शस्त्र है जिसके द्वारा दुनिया को बदला जा सकता है।" शिक्षा वह शस्त्र है जिसके द्वारा असंभव कार्य को संभव किया जा सकता है। शिक्षा एक बहुत ही उपयोगी एवं मूल्यवान प्रक्रिया है। युगो से मनुष्य ने शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार किया है। सभ्य समाज की अनिवार्य जरूरियात है शिक्षा। मनुष्य के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। "तमसो मा ज्योतिर्गमय" का तात्पर्य है कि शिक्षा व्यक्ति को अंधकार रूपी अंधकार में से ज्ञानरूपी प्रकाश की तरफ प्रेरित करती है। शिक्षा मानवी में रहे हुए उत्तम मनुष्यों का अविष्कार करके नर में से नारायण एवं नारी को नारायणी बनाती है। विद्या शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु विद में से हुई है। विद अर्थात जानना। विद्या ज्ञान की प्राप्ति है। शिक्षण शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु शस में से हुई है। अर्थात अनुशासन में रहना। शिक्षण अर्थात शिस्त, मानसिक संतुलन एवं मन को शिस्तबद्ध बनाना।

शिक्षा को अंग्रेजी में Education कहते हैं। लैटिन शब्द Educare में से बना है। Educare का अर्थ होता है शिक्षण प्रदान करना, उछेर करना, संवर्धन करना। शिक्षण की परिभाषा देते हुए गांधीजी कहते हैं "शिक्षण अर्थात बालक एवं व्यक्ति के शारीर, मन एवं आत्मा में रहे उत्तम अंशो का अविष्करण। जो व्यक्ति शिक्षण प्राप्त न करें तो वह प्राणी समान है। शिक्षा का तात्पर्य मात्र चार दीवारों के भीतर ही शिक्षा प्राप्त करना नहीं। व्यक्ति जहां से भी अपने अंदर रहे उत्तम अंशो को बाहर लाए वह शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से उसकी स्वयं एवम् समाज की प्रगति होती है। शिक्षित व्यक्ति द्वारा शिक्षित एवं समझदार समाज का निर्माण होता है।

"सा विद्या या विमुक्तये" विद्या वह है जो सभी प्रकार के बंधन से मुक्त कराती है। यदि हमें आत्मनिर्भर बनना हो एवं रोजगारी प्राप्त करनी हो, हमारे जीवन स्तर में सुधार लाना हो तो भी हमारा शिक्षित होना जरूरी है। विद्यालय महाविद्यालय में जाकर मात्र डिग्री प्राप्त करना शिक्षा नहीं है। शिक्षा तो आजीवन चलती प्रक्रिया है जिसका कभी भी अंत नहीं आता। शिक्षा औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों रूप से प्राप्त होती है। विद्यालय महाविद्यालय में प्राप्त किया जाने गया ज्ञान वह ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। शिक्षा सतत विकास की विभावना को परिपूर्ण करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

सतत विकास का सर्वप्रथम प्रयोग "World Conversation Strategy" द्वारा किया गया। जिसे कुदरत एवं कुदरती संसाधनों के संरक्षण के लिए आंतरराष्ट्रीय संघ ने 1980 में प्रस्तुत किया। ब्रण्डलैंड रिपोर्ट के अनुसार भावी पेढ़ी की जरूरियातो को नुकसान पहुंचाए बिना वर्तमान पेढ़ी की जरूरियातो को परिपूर्ण करना । सतत विकास अर्थात लंबे समय तक बना रहे वह विकास । सतत विकास को प्राप्त करने के लिए शिक्षा आवश्यक ज्ञान एवं कौशल के विकास को बढ़ावा देती है । पृथ्वी पर जो हमें कुदरती

संपत्ति प्राप्त है उस पर मात्र वर्तमान पीढ़ी का ही अधिकार नहीं है परंतु भावी पेढ़ी का भी उस पर उतना ही बराबर का अधिकार है । शिक्षा नागरिको को यह बताने में सक्षम है कि पृथ्वी के संसाधनों को कैसे सुरक्षित किया जाए जो मर्यादित मात्रा में उपलब्ध है एवं दिन प्रतिदिन जिसमें कमी होती जा रही है। सतत विकास की अवधारणा को World Commission on Environment and Development द्वारा 1987 में परिभाषित किया गया। Rio Declaration on Environment and Development 1992 सततता के 27 सिद्धांतों को निर्धारित करता है, ऐसा ही एक सिद्धांत है सतत विकास । सतत विकास को प्राप्त करने के लिए पर्यावरण संरक्षण विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है जिसे अलग नहीं किया जा सकता। सतत विकास को उन विकासात्मक गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाता है। UN Conference on Environment And Development popularly known the Earth Summit में भी १९९२ में तर्क वितर्क किया एवं सतत विकास के तीन स्तंभों जिसमें अर्थतंत्र, समाज एवं पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए अपने संकल्प की पुष्टि की। तथापि, पीयरसे एवं बारफोर्ड के अनुसार सतत विकास एक प्रक्रिया है जिसमें प्राकृतिक साधनों के आधार को छय नहीं होने दिया जाता यह पर्यावरणीय गुणवत्ता की अब तक अप्रशंसित भूमिका पर बल देता है तथा वास्तविक आय एवं जीवन की गुणवत्ता की वृद्धि की प्रक्रिया में पर्यावरणीय आगतो पर भी बल देता है।

सतत विकास के उद्देश्य

- सभी के जीवन की गुणवत्ता में शपथ सुधारों का सृजन ।
- आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करके आर्थिक वृद्धि बढ़ाना ।
- पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में सहायता करना ।
- अंतर प्रजननात्मक निष्पक्षता का संवर्धन ।
- आर्थिक विकास के लाभों को अधिकतम बनाने का लक्ष्य रखना । साथ में पर्यावरण एवं प्राकृतिक साधनों का भंडार सुरक्षित रखना।
- पर्यावरण संसाधन एवं भावी पेढ़ी की जरूरियातो को नुकसान पहुंचाने बिना मानवीय एवं भौतिक पूंजी के संरक्षण एवं वृद्धि के लिए आर्थिक विकास को तीव्र करने का लक्ष्य रखना।
- सतत विकास प्राप्त करने का लक्ष्य रखना जिससे प्राकृतिक संपत्ति में कमी ना हो।

सतत विकास के लक्ष्यांक

सतत विकास के लक्ष्यों को संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन में समावेश किया गया था ।जिस महासभा की बैठक 25 से 27 सितंबर 2015 में आयोजित की गई थी । सतत विकास के लिए 15 वर्ष के लिए 17 लक्ष्य निर्धारित किए गए थे । जिसे वर्ष २०१६ से २०३० तक लक्ष्य प्राप्त करने का निर्णय लिया गया था। इस महासभा में १९३ देश सम्मिलित थे।

सतत विकास के १७ लक्ष्यांक

१. दुनिया के सभी देशों में से अत्यधिक गरीबी को समाप्त करना। अत्यधिक गरीब अर्थात् जो प्रतिदिन डॉलर १.२५ से कम में जिंदगी व्यापम करते हैं।
२. भुखमरी को समाप्त करना।
३. खाद्य सुरक्षा एवं टिकाऊ खेती को प्रोत्साहित करना।
४. सभी को स्वस्थ एवं बेहतर जीवन प्रदान करना।
५. गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रभार देना।
६. जातीय समानता को बढ़ावा देना।
७. सभी के लिए स्वच्छ पानी एवं स्वच्छता उपलब्ध कराना।
८. निरंतर, सतत एवं समावेशी आर्थिक विकास को महत्त्व देना।
९. औद्योगिकिकरण को बढ़ावा देना एवं नए विचारों को प्रोत्साहित करना।
१०. देश के अंदर एवं विभिन्न देशों के बीच असमानता को कम करना।

११. टिकाऊ शहेरी एवं सामुदायिक विकास करना।
१२. जिम्मेदारी के साथ वपराश एवं उत्पादन करना।
१३. जलवायु परिवर्तन एवं उसके ख़राब असरो से निपटने के लिए तत्काल कार्यवाही सुनिश्चित करना।
१४. समुद्र, महासागरों एवं समुद्री संसाधनों का संरक्षण करना।
१५. स्थलीय, पारिस्थितिकीय प्रणालियों, जंगलो, भूमिक्षरण एवं जैव विविधता से जुड़ी समस्याओं को रोकने का प्रयास करना।
१६. शांति एवं न्याय के लिए योग्य संस्थान सुनिश्चित करना।
१७. सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करना एवं कार्यान्वित साधनों को मजबूत बनाना।

शिक्षा के द्वारा सतत विकास

आज २१वी सदी में दुनिया का हर देश विकास के अन्धाधुनी दौड़ में पर्यावरण के नुकशान को अनदेखा कर रहा है। मानवी की जरूरियाते अमर्यादित हैं एवं जिसका कोई अनत नहीं हैं। परन्तु कुदरती साधन संपत्ति मर्यादित हैं । खनिज, खनिजतेल, पेट्रोल, जमीन जैसी संपत्ति पुनः अप्राप्य है।आज के समय में इन सधी संसाधनों का दुरूपयोग हो रहा है । जिसका गंभीर परिणाम हमें भुगतना पड़ेगा एवं अलग अलग प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग के स्वरुप में भुगत रहे है। सतत विकास के लिए हमें जागृत होना होगा। विश्व के सभी नागरिको को सतत विकास की अवधारणा से सभान होना होगा । इसका अर्थ यह नहीं है की विकास को रोक दिया जाये परन्तु जरूरी यह है कि विकास की सही दिशा एवं मापदंड निर्धारित किये जाये । ऐसा मार्ग अपनाया जाये जिससे विकास भी हो एवं पर्यावरण में समतुला भी बनी रहे। आज की शिक्षा नीति की यह आवश्यकता है कि पर्यावरण के विस्तृत अध्ययन के साथ साथ इससे संबंधित व्यावहारिक ज्ञान पर बल दिया जाये । औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार के शिक्षण से बच्चो में पर्यावरण के महत्व एवं संतुलन के बारे में जानकारी दी जानी चाहिये। शिक्षा के माध्यम से ही सतत विकास के १७ लक्षयांक प्राप्त किये जा सकते है। गरीबी कम करना, जातिय असमानता में कमी करना, पर्यावरण की सुरक्षा करना जैसे उद्देश्यों को शिक्षा के द्वारा पूर्ण किया जा सकता हैं।

संदर्भ–

१. https://www.researchgate.net/publication/339166354
२. https://www.jagranjosh.com/general-knowledge/list-of-all-thesustainable development-goals
३. https://www.hindilibraryindia.com
४. https://leverageedu.com/blog/hi/sustainable-development
५. https://www.panda.org/wwf_news/?210950/Importance-of-education-for-sustainable-development